Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

आकाशवाणी, रोहतक से हरियाणवी लोकगीतों के प्रचार-प्रसार में महिलाओं का योगदान

Parul[1]* Dr. Rajkumar Sharma[2]

[1] Research Scholar, Department of Music, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

[2] Associate Professor, Department of Music, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

सार – ***आकाशवाणी, रोहतक का शुभारम्भ 8 मई, 1976 को हुआ। हरियाणा के पूर्व अस्तित्व में आने के बाद हरियाणा में तीन आकाशवाणी केन्द्र स्थापित हुए जिनमें सर्वप्रथम रोहतक केन्द्र की स्थापना हुई। इस केन्द्र की स्थापना से हरियाणा के कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का सुनहरा अवसर मिला। अन्य विधाओं के साथ ही लोक संगीत के अन्तर्गत भी गायकों के ऑडीशन हेतु आवेदन मांगे गए। स्वर-परीक्षा में उत्तीर्ण कलाकारों को प्रस्तुति के नियमानुसार अवसर दिए गए।***

----------X----------

उस समय लोकगायकी में पुरुषों का वर्चस्व था। बहुत कम महिलाएं ही इस क्षेत्र से जुड़ने का साहस कर पाई। इसके दो मूल कारण थे। प्रथम तो यह कि महिलाएँ स्वभाव में संकोची होती हैं, दूसरा एकल गायन प्रस्तुति के लिए उनमें उस समय आत्मविश्वास का अभाव था। कुछ महिलाएँ साहस कर आगे आई तथा उन्होंने पहली बार में ही स्वर परीक्षा उत्तीर्ण कर अपनी प्रतिभा से सब को परिचित करवाया। इनमें समूह गायिकाओं की प्रस्तुति सराहनीय रही। ये लोकगीत पार्टी के रूप में सफल रही। इन पार्टियों में ग्रामीण परिवेश से जुड़ी महिलाएँ थी तथा उन्हें स्वर, ताल-लय का भी ज्ञान था। कुछ महिलाएँ अच्छी-मधुर आवाज होने के बावजूद स्वर परीक्षा पास नहीं कर पाई क्योंकि उन्हें लय-ताल का ज्ञान न था। आकाशवाणी के कार्यक्रम दूर-दराज क्षेत्र में सुने जाते है अतः गायन की गुणवत्ता का पूरा ध्यान रखा जाता है।

उस समय एकल गायन में श्रीमती रमाकान्ता शर्मा, स्वाति शर्मा, श्रीमती अमरजीत कौर तथा कमला देवी के प्रमुख नाम थे। गायन पार्टियों में शकुन्तला डांगी पार्टी, सज्जन कौर पार्टी, कौशल्या काद्यान पार्टी तथा शशी रमा पार्टी प्रमुख थी। इन सभी संगीत पार्टियों का गायन तथा लोकगीतों का चयन उत्कृष्ट था। इन पार्टियों को जनता में श्रोताओं की सराहना मिली थी। ये लोकप्रिय पार्टियाँ थी। इन के कार्यक्रमों के गानों के पुनः प्रसारण की फरमाइश की जाती थी। श्रोता पोस्टकार्ड द्वारा इन प्रसारणों का मूल्यांकन कर आकाशवाणी निर्देशक को पत्र लिखते थे।

शकुन्तला डांगी पार्टी में चारों बहनें एक से बढ़कर एक उम्दा गायिकाएँ थी। जिनके नाम शकुन्तला, बिमला, संतोष तथा मीना था। सज्जन कौर पार्टी में सज्जन कौर, रमाकान्ता, तारा हुडडा, शान्ति देवी तथा प्रेम धारा, पाँच सदस्य थे। इस पार्टी की यह विशेषता थी कि इन्होंने सदैव नए गीतों का आकाशवाणी से प्रसारण किया। इससे पहले कुछ ही गीत थे जो सभी बारी-बारी दोहराते थे। इन्होंने संस्कार गीतों (जन्म-विवाह) के साथ-साथ ऋतुमास (सावन-फागुन) तथा कार्तिक के गीतों से भी जनमानस को अवगत कराया। इसी के साथ जकड़ी, उपदेशात्मक गीत, शब्द, भजन तथा विविध विषयों के गीत भी प्रसारित किए। यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि उस समय प्रसारण से पूर्व गीतों की रिकार्डिंग नहीं की जाती थी। प्रसारण लाइव (सीधा) होता था अतः थोड़ी से असावधानी से कार्यक्रम के बिगड़ने की आशंका सदैव बनी रहती थी।

सज्जन कौन एवं सखियों द्वारा गाई हुई बनड़ी "छोटी सी बनड़ी, फेरयां पै झगड़ी" बहुत लोकप्रिय हुई। इसकी लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि बाद में इस को बालीवुड की फिल्म में भी गाया गया।

कौशल्या काद्यान एवं सखियाँ भी संख्या में पाँच सदस्यों की टीम थी। यह पार्टी सुरीली थी किन्तु सदस्यों के अपरिहार्य कारणों से पार्टी छोड़ने के कारण शीघ्र भंग हो गई। इन के अतिरिक्त दूसरी पार्टियों में दो अथवा तीन सदस्य ही थे।

www.ignited.in

इसके बाद शशी रमा पार्टी ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए आकाशवाणी से स्वर परीक्षा पास की। इस पार्टी में शशीबाला, रमाकान्ता शर्मा, निर्मल अहलावत शकुन्तला साहू तथा मधुबाला थी। यह एक सुरीली पार्टी थी इन्होंने लुप्त प्रायः गीतों का जनमानस से परिचय करवाया। लोरी गीत, झुंझना, नए जच्चा गीत, बड़े भात, विदाई के नए गीत, सांझी गीतों के प्रसारण से लोकगीतों को जनमानस में एकदम लोकप्रिय कर दिया। सावन-फागुन के नई बहर के गीत भी शशी रमा पार्टी की विशेष उपलब्धि रही।

लोकगीतों का प्रसारण उस समय दिन में तीन बार किया जाता था, प्रातः दोपहार तथ साँयकाल। इस कार्यक्रम के अतिरिक्त आकाशवाणी पर लोक संगीत के कुछ विशेष कार्यक्रम भी तैयार करवाए जाते थे जिनमें संगीत रूपक तथा साँग सम्मिलित थे। विशेष पर्व पर विशेष लोकगीतों का प्रसारण किया जाता था जिन्हें तैयार करने में पैक्स तथा कम्पोजर की भूमिका अहम् होती थी। इन विशेष कार्यक्रमों में पार्टी की किसी उत्कृष्ट गायिका अथवा एकल कलाकार की सेवाएँ ली जाती थी। संगीत रूपक में महिला तथा पुरुष कलाकार दोनों ही होते थे। एक संगीत रूपक में कम से कम आठ से दस गायक-गायिका भाग लेती थी। इसी प्रकार रेड़ियों साँग में कहानी के अनुरूप महिलाओं की भागीदारी होती थी। यह भी देखने में आया है कि प्रत्येक साँग में एक न एक लोकगीत अवश्य होता था।

आकाशवाणी द्वारा विभिन्न अवसरों पर कन्सर्ट भी करवाई जाती थी। इनमें अवसर के अनुसार आकाशवाणी के कलाकार अपनी प्रस्तुति देते थे। इन प्रस्तुतियों में स्किट, नृत्य तथा रागनी व लोकगीत होते थे। लोकगीतों को लोकप्रिय करने में तथा प्रचार-प्रसार में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

कई बार कलाकारों को दूसरे प्रान्त के आकाशवाणी केन्द्रों पर भी लोकगीतों की प्रस्तुति के लिए भेजा जाता है। प्रत्येक केन्द्र पर दूसरे प्रान्त के लोकगीतों के प्रसारण का निश्चित तथा निर्धारित कार्यक्रम होता है।

महिलाओं द्वारा लोकगीतों में सुख-दुःख, आशा-निराशा तथा विरह-मिलन की भावनाओं की अभिव्यक्ति की जाती है। जैसा कि हम जानते ही है कि लोकगीत ग्रामीण परिवेश की अज्ञात महिलाओं द्वारा, महिलाओं के लिए और महिलाओं के हृदय के उद्गारों की सुन्दर अभिव्यक्ति होते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक इन लोकगीतों का मानव जीवन से अटूट संबंध है।

आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से महिलाओं ने न केवल परम्परागत लोकगीतों का प्रचार किया अपितु सामाजिक बुराईयों पर गीत गाकर जागृति लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। दहेज प्रथा, नशा, भ्रूण हत्या, लिंग अनुपात, पर्यावरण, अशिक्षा, साक्षरता आदि सामाजिक सरोकारों पर गीत लिखे तथा गाए। पारिवारिक संबंधो की गरिमा बनाए रखने के लिए शिक्षाप्रद गीत गाए। कुछ लोक गीत दृष्टव्य हैं-

सूट बूट जुराब रै तेरे कंद का दामण लाल रै

पनघट पै मत न्या ओढिए।

कंद का दामण लाल रै तेरी चूँदड़ी माणस मार रै

पनघट पै मत न्या ओढिए।

सुसरा धरम का बाप रै, तेरी सासू धर्म की माय रै

नणदल का कहणा मानिए।

देवर-जेठ सब एक से रै, चाहे कितनी पड़ ज्या भीड़ रै

पर घूँघट मत न्या खोलिए।

दोराणी-जिठाणी सब बाहण सै रै चाहे किसे हों हालात रै

पर सामी मत ना बोलिए।

महिलाओं द्वारा जकड़ी गीतों को पुनः जीवित किया गया। जकड़ी गीत कुछ समय के लिए घर के तीज त्यौहारों तक ही सीमित हो गई थे। आज की पीढ़ी को तो जकड़ी नाम सुनने में ही नया तथा अजीब लगता है। जकड़ी गीतों में विषय की विविधता के कारण अब पसन्द किया जाता है। कुछ जकड़ी गीतों की धुनों पर एलबम गीत भी लिखे गए है। उदाहरण के लिए चौकलिया धुन पर पिछले दिनों एक गीत बहुत लोकप्रिय हुआ।

चौड़े पाते बड़ पीपल के गहरी छाँह जामण की हे

चार सखी हम एक ढाल (गाम) की, एक सखी सामड़ की हे।

इसी गीत की धुन इतनी मधुर है कि इस पर आधारित लिखा गीत-तेरी नचाई नाचूँ सूँ और किसे की औकात नहीं। इसी प्रकार 'मैं तो मरी होती आज मरी होती' की धुन पर आधारित गीत 'हट जा ताऊ पाछै नै, ने लोकप्रियता के सभी रिकार्ड तोड़ दिए। ये धुने रेड़ियों के माध्यम से, महिलाओं के श्री मुख से ही जनता में लोकप्रिय हुई।

आकाशवाणी रोहतक महिलाओं की सांगीतिक भावनाओं की अभिव्यक्ति का एक उत्तम सशक्त मंच अथवा माध्यम है।

www.ignited.in

बहुत सी महिलाओं ने घर की चारदिवारी से निकल यहां अपनी गीतात्मक प्रस्तुति देने का साहस जुटाया है। महिलाओं के माध्यम से ही पुराने पारम्परिक गीत प्रकाश में आए तथा जनता को लोकगीतों की धनी विरासत का ज्ञान हुआ। भले ही आकाशवाणी, रोहतक ने लोकसंस्कृति का दिग्दर्शन करा कई नए आयाम स्थापित किए हैं किन्तु अभी भी लोकगीतों का अक्षय भंडार महिलाओं के पास सुरक्षित जिसे बाहर लाने का प्रयास किए जा रहे हैं। इस दिशा में आकाशवाणी दिल्ली (मुख्यालय) के प्रयास भी सराहनीय हैं जिसके अनुसार अधिकतम महिला गीतों को संकलित कर भविष्य में संरक्षण हेतु सांगीतिक स्वर लिपि बना कर सुरक्षित रखा गया है। स्वरलिपि तैयार करने में भी महिला कलाकारों का योगदान है।

वर्तमान में समूह के स्थान पर एकल गान में महिलाएँ बढ़ चढ़ कर भाग ले रही है। इनमें कैजुअल कलाकार के अतिरिक्त ऊँचे ग्रेड बी हाई के कलाकार भी हैं। ग्रेड पास करने के लिए कैजुअल आर्टिस्ट को पुनः स्वर परीक्षा पास करनी पड़ती है। आकाशवाणी रोहतक केन्द्र में कई महिला कलाकार बी. हाई ग्रेड की गायिकाएँ हैं।

निष्कर्ष यह है कि लोकगीतों के जन-जन तक पहुँचाने तथा लोकप्रिय बनाने का श्रेय महिलाओं को ही जाता है।

सन्दर्भ सूची

1. Dr. S.G. Grierson (1883). Journal of Royal Asiatic Society Book-III, Part-1, p. 32.
2. Encyclopeadia Britanica, Vol. XIV, (1950), p. 448
3. बन्दोबस्त रिपोर्ट जिला हिसार, पृ0 63-94
4. हिन्द स्टैण्डर्ड डिक्शनरी ऑफ फॉकलोर, मैथालाजी एंड लिजिण्ड, वा. पृ0 1039
5. Colubia Encyclopea, p. 737
6. भारतीय लोकगीतों में हरियाणा का योगदान, डॉ0 रमा कान्ता, पृ0 26

Corresponding Author

Parul*

Research Scholar, Department of Music, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

www.ignited.in